संभवनाथ चालीसा

श्री जिनदेव को करके वन्दन,

जिनवाणी को मन में ध्याय।

काम असम्भव कर दें सम्भव,

समदर्शी सम्भव जिनराय॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

जगतपूज्य श्री सम्भव स्वामी।

तीसरे तीर्थंकर हैं नामी॥

धर्म तीर्थ प्रगटाने वाले।

भव दुख दूर भगाने वाले॥

श्रावस्ती नगरी अति सोहे।

देवों के भी मन को मोहे॥

हिन्दीपथ.कॉम

मात सुषेणा पिता दृढ़राज।

धन्य हुए जन्मे जिनराज॥

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी आए।

गर्भ कल्याणक देव मनायें॥

पूनम कार्तिक शुक्ला आई।

हुई पूज्य प्रगटे जिनराई॥

तीन लोक में खुशियाँ छाई।

शची प्रभु को लेने आई॥

मेरु पर अभिषेक कराया।

सम्भवप्रभु शुभ नामधराया॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

बीता बचपन यौवन आया।

पिता ने राज्याभिषेक कराया॥

मिलीं रानियाँ सब अनुरुप।

सुख भोगे चवालिस लक्ष पूर्व॥

एक दिन महल की छत के ऊपर।

देख रहे वन-सुषमा मनहर॥

देखा मेघ-महल हिमखण्ड।

हुआ नष्ट चली वायु प्रचण्ड॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

तभी हुआ वैराग्य एकदम।

गृहबन्धन लगा नागपाश सम॥

करते वस्तु-स्वरूप चिन्तवन।

देव लौकान्तिक करें समर्थन॥

निज सुत को देकर के राज।

वन को गमन करें जिनराज॥

हुए सवार 'सिद्धार्थ' पालकी।

गए राह सहेतुक वन की॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मंगसिर शुक्ल पूर्णिका प्यारी।

सहस भूप संग दीक्षा धारी॥

तजा परिग्रह केश लौंच कर।

ध्यान धरा पूरब को मुख कर॥

धारण कर उस दिन उपवास।

वन में ही फिर किया निवास॥

आत्मशुद्धि का प्रबल प्रमाण।

तत्क्षण हुआ मनः पर्याय ज्ञान॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

प्रथमाहार हुआ मुनिवर का।

धन्य हुआ जीवन 'सुरेन्द्र' का॥

पंचाश्चर्यों से देवों के।

हुए प्रजाजन सुखी नगर के॥

चौदह वर्ष की आतम-सिद्धि।

स्वयं ही उपजी केवल ऋद्धि॥

कृष्ण चतुर्थी कार्तिक सार।

समोशरण रचना हितकार॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

खिरती सुखकारी जिनवाणी।

निज भाषा में समझे प्राणी॥

विषयभोग हैं विषसम विषमय।

इनमें मत होना तुम तन्मय॥

तृष्णा बढ़ती है भोगों से।

काया घिरती है रोगों से॥

जिनलिंग से निज को पहचानो।

अपना शुद्धातम सरधानो॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

दर्शन-ज्ञान-चरित्र बतायें।

मोक्ष मार्ग एकत्व दिखायें॥

जीवों का सन्मार्ग बताया।

भव्यों का उद्धार कराया॥

गणधर एक सौ पाँच प्रभु के।

मुनिवर पन्द्रह सहस संघ के॥

देवी- देव- मनुज बहुतेरे।

सभा में थे तिर्यंच घनेरे॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

एक महीना उम्र रही जब।

पहुँच गए सम्मेद शिखर तब॥

अचल हुए खड़गासन में प्रभु।

कर्म नाश कर हुए स्वयम्भू॥

चैत सुदी षष्ठी था न्यारी।

'धवल कूट' की महिमा भारी॥

साठ लाख पूर्व का जीवन।

पग में 'अश्व' का था शुभ लक्षण॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

चालीसा श्री सम्भवनाथ,

पाठ करो श्रद्धा के साथ।

मनवांछित सब पूरण होवें,

'अरुणा' जनम-मरण दुख खोवे॥

जाप – ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्भवनाथाय नमः

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य जैन चालीसा

आदिनाथ चालीसा

अजितनाथ चालीसा

संभवनाथ चालीसा

अभिनंदननाथ चालीसा

सुमतिनाथ चालीसा

पद्मप्रभु चालीसा

सुपार्श्वनाथ चालीसा

चंद्रप्रभु चालीसा

पुष्पदंत चालीसा

शीतलनाथ चालीसा

श्रेयांसनाथ चालीसा

वासुपूज्य चालीसा

विमलनाथ चालीसा

अनंतनाथ चालीसा

धर्मनाथ चालीसा

शांतिनाथ चालीसा

कुंथुनाथ चालीसा

अरहनाथ चालीसा

मल्लिनाथ चालीसा

मुनि सुव्रतनाथ चालीसा

नमिनाथ चालीसा

नेमिनाथ चालीसा

पार्श्वनाथ चालीसा

महावीर चालीसा

हिन्दीपथ.कॉम

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com